



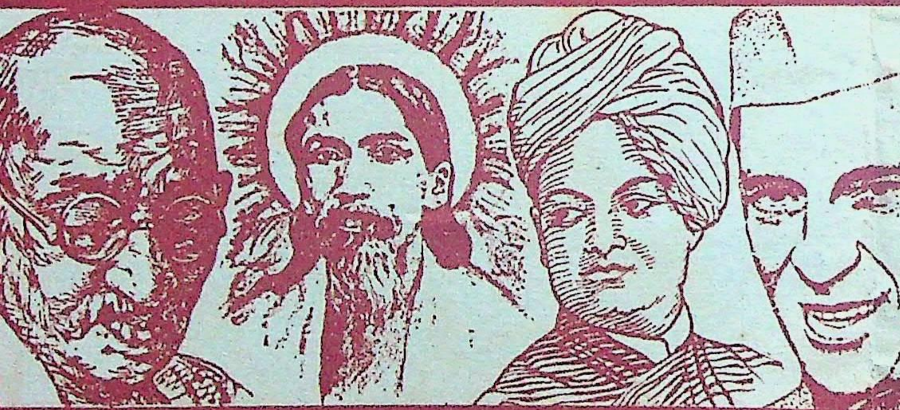


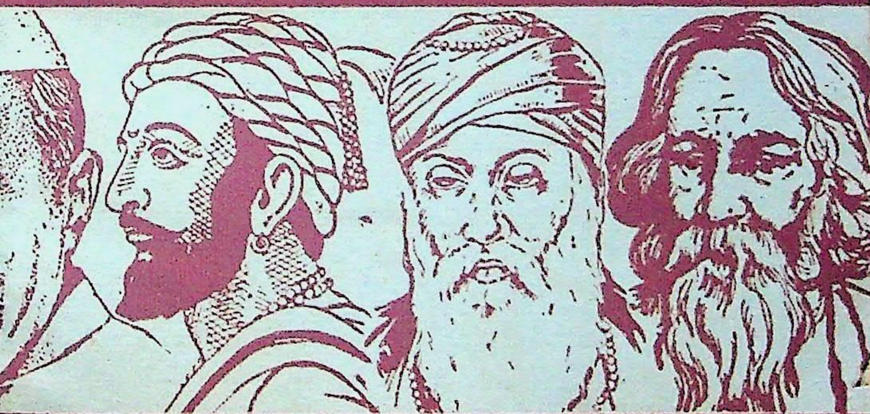
सरदार भगतसिंह













सरदार भगतसिंह

प्राणनाथ वानप्रस्थी

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली



मूल्य : एक रुपया



शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली, में मुद्रित

SARDAR BHAGAT SINGH (Biography)
by Pran Nath Vanprasthi Re. 1·00







कुछ पहले की बातें

****

संसार का इतिहास पढ़ने से पता लगता है कि हर पराधीन देश में ऐसे-ऐसे वीर जन्म लेते रहे हैं जिन्होंने अपने को स्वतंत्र कराने के लिए बड़े-बड़े बलिदान दिए।

हमारे देश का इतिहास उठाकर देखने से पता लगता है कि हमारी सभ्यता का लोहा सारा संसार मानता रहा है। इस भूमि ने राम, कृष्ण, भरत, भीष्म, अशोक, सांगा, प्रताप, शिवाजी सरीखे वीर पुरुषों और महर्षि पाणिनि, कपिल, गौतम, कणाद, वाल्मीकि, शंकराचार्य, महावीर, बुद्ध, नानक और दयानन्द जैसे महापुरुषों को जन्म दिया।

महाभारत के समय तक इस देश का चारों ओर चक्रवर्ती राज्य रहा। रामचन्द्रजी ने वानर-देश और

लंकापुरी को विजय किया। कृष्णजी ने कई अधर्मी राजाओं को जीता। पर इन देशों को अपने राज्य में मिलाना तो दूर रहा उनकी ओर ताका तक भी नहीं; वहीं के लोगों के हाथ में शासन सौंप आए। इस तरह हमारे देश के बहादुरों ने सारे संसार से प्रेम का नाता जोड़ा। इसी कारण से संसार में सुख भी था।

महाभारत का युद्ध हुआ, भाई-भाई आपस में लड़े। यहीं से आपसी फूट का ऐसा बीज बोया गया कि आज चार सहस्र वर्ष बीत जाने पर भी हमारे देशवासी संभले नहीं हैं। वे सांसारिक भोगों में ऐसे फंसे कि अपने पूर्वजों के पदचिह्नों तक को भुला बैठे। 'तुझको पराई क्या पड़ी, अपनो निबेड़ तू।' भाई-भाई की सहायता से मुंह मोड़ बैठा। देखते-देखते तैमूरलंग और महमूद गज़नवी ने जी भर के हमारे देश को लूटा।

आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले की बात है, यूरोप महाद्वीप से सहस्रों मील की यात्रा तय कर कुछ अंगरेज़ व्यापारी भारत में आए। हमारी दुर्बलताओं का सहारा लेकर ये मुट्ठी-भर लोग सारे देश पर छा गए। जो कल तक झुक-झुककर प्रणाम करते नहीं थकते थे, उनके हाथ में देश की बागडोर आ गई।

पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े जाने पर भी

हमारे देश में सहस्रों ऐसे वीर नवयुवकों ने जन्म लिया, जिन्होंने हंसते-हंसते फांसी का फंदा अपने गले में डाल लिया और मातृभूमि की स्वतन्त्रता के यज्ञ में अपने को होम कर दिया। देशभक्ति भी क्या सुन्दर वस्तु है, जिसका नाम लेते ही देश के सच्चे सपूतों का रुधिर खौलने लगता है।

सन् १८५७ का विद्रोह कौन नहीं जानता। महारानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे और नाना साहब सरीखे अनगिनत वीरों और शहीदों ने अपना रक्त देकर मातृभूमि के बगीचे को हरा-भरा किया था। देश के लाड़लों की याद में सन् १९५७ में अर्थात् सौ वर्ष बीतने के बाद भारत सरकार ने शताब्दी-उत्सव मनाकर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

सन् १८९४ में दामोदर चाफेकर और बालकृष्ण चाफेकर नाम के दो महाराष्ट्रीय भाइयों ने अपना बलिदान दिया। देश के सच्चे नेता लोकमान्य तिलक इनके अंग-संग थे। घटना इस प्रकार है कि उन दिनों पूना के आसपास प्लेग का रोग बड़े ज़ोर-शोर से फैला। अंगरेज़ अधिकारी मिस्टर रैंड और एमहर्स्ट के बुरे बर्ताव से लोग बुरी तरह चिढ़ गए थे। इन चाफेकर भाइयों से यह सहन न हुआ। इन्होंने क्रोध में भरकर

उन दोनों अंगरेज़ों को मृत्यु के घाट उतार दिया, जिसके बदले में उन्हें फांसी का दण्ड मिला।

इसी तरह सन् १८९९ में एक अंगरेज़ पुलिस अधिकारी के अन्याय से महाराष्ट्र ऊब उठा। उसे भी मार डाला गया। इस अपराध में चार पुरुषों को फांसी हुई।

सन् १९०५ में श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विलायत जाकर भारतीय विद्यार्थियों को स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाने का प्रबन्ध किया। इनकी तपस्या ने विनायक दामोदर सावरकर को सच्चा देशभक्त बना दिया, जिसने विदेशियों के चंगुल से मातृभूमि को छुड़ाने के लिए बड़े-बड़े कारनामे किए, जो इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखे जाएंगे।

उधर बंगाल में भी देशभक्तों ने बड़े-बड़े बलिदान दिए, जिनमें रासबिहारी बोस और सुभाषचन्द्र बोस का नाम सदा गर्व से लिया जाएगा।

पंजाब की वीरभूमि के बलिदान की अमिट गाथा तो इस पुस्तिका के अगले पन्नों में भरी पड़ी है।

जन्म

****

हमारे देश के उत्तर में पंजाब प्रान्त है। उस समय इस प्रान्त की सीमाएं उत्तर में रावलपिंडी नगर से दक्षिण में दिल्ली तक फैली हुई थीं। यहां के लोग सुखी थे और हरएक के पास अपने निर्वाह के लिए धन और सम्पत्ति भी थी। इसकी राजधानी लाहौर में थी। यहां इतना व्यापार होता था कि हर मनुष्य कुछ न कुछ मज़दूरी करके अपना निर्वाह कर लेता था।

भारतवर्ष के उत्तर में होने से, जितने भी आक्रमण इस देश पर हुए, सब इसी मार्ग से हुए। शत्रुओं से सदा लड़ते रहने के कारण इस भूमि ने बड़े-बड़े वीरों को जन्म दिया जिनका नाम इतिहास में अमर है। भला पोरस, हरिसिंह नलुआ, गुरु गोविन्दसिंह, महा-

राजा रणजीतसिंह और बन्दा बहादुर का नाम किसने नहीं सुना ! स्वामी श्रद्धानन्द, पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय और बाबा खड़गसिंह जैसे नररत्नों की दहाड़ इसी वीर-भूमि से उठी थी, जिसने अंगरेज़ों के दिल को कंपा दिया था।

इसी प्रान्त में एक नगर लायलपुर (अब पाकिस्तान में) है। यहां के लोग बड़े लम्बे कद के होते हैं। आज से पचास वर्ष पहले की बात है। इसी ज़िले के बंगा नामक ग्राम में एक क्षत्रिय सिख परिवार रहता था। यह परिवार अपनी देशभक्ति के लिए प्रसिद्ध था। इसी परिवार में १३ आश्विन, संवत् १९६४ (सितम्बर, सन् १९०७) के दिन एक पुत्र का जन्म हुआ। पुत्र-जन्म के समय पिता सरदार किशनसिंहजी देशप्रेम के अपराध में जेल में बंद थे। इनके जीवन का बहुत बड़ा भाग जेल में ही बीता। इस बालक के चाचा सरदार अजीतसिंहजी तो महान् देशभक्त थे। अंगरेज़ सरकार ने उन्हें देश से निर्वासित किया हुआ था। इस वीर को जीवन-भर अपनी जन्मभूमि में लौटने की आज्ञा नहीं मिली। छोटे चाचा सरदार स्वर्णसिंहजी की मृत्यु सन् १९०८ में जेल में ही हो गई।

जब बालक की दादी को बधाइयां मिल रही थीं, उस समय विदेशी सरकार ने कृपा करके सरदार किशनसिंहजी को कुछ दिनों के लिए जेल से छोड़ दिया ताकि वे पुत्र का मुख देख सकें। इनके घर में आते ही गांव-भर में बालक का जन्म-उत्सव मनाया गया। दादी बालक को लाड़ से 'भागोंवाला' अर्थात् भाग्यवान कहा करती थीं। इसी पर बालक का नाम भगतसिंह रखा गया।

भगतसिंह की माता और दादी बड़ी धार्मिक देवियां थीं। उनसे सुन-सुनकर तीन वर्ष की आयु में ही बालक ने गायत्रीमंत्र को याद कर लिया था। बालक जिस किसीके भी कहने पर तोतली और मीठी वाणी में गायत्रीमंत्र का शुद्ध पाठ सुना देता था, जिसे सुन-कर लोग बड़े प्रसन्न होते थे। बालक बड़ा हंसमुख था। जो भी उसे देखता, उससे दो-चार बातें करता और उसके गुणों पर लट्टू हो जाता।

छोटी आयु में ही जब बालक भगतसिंह अपने साथियों में खेलता तो टोलियां बनाकर आपस में युद्ध का अभ्यास किया करता। इस तरह खेल-खेल में ही इस होनहार बालक ने अपने साथियों में वीरता के संस्कार कूट-कूटकर भर दिए थे।

शिक्षा

****

पांच वर्ष की आयु में भगतसिंह को ग्राम के प्राइमरी विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा गया। आप पढ़ाई में बहुत परिश्रम करते थे। अपना पाठ बड़े ध्यान से याद करते थे। आप अध्यापक की हर आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करते थे।

इस बीच आप अपने पिता के साथ एक बार लाहौर गए, तथा श्री आनन्दकिशोरजी के घर पर ठहरे। उन्होंने बालक को प्यार से गोदी में लिया। बालक ने प्यारे-प्यारे शब्दों से उनको खूब प्रसन्न किया। उन्होंने पूछा, "पुत्र ! तुम क्या करते हो ?" बालक भगतसिंह बोला, "मैं बन्दूकें बेचता हूं।" बालक का उत्तर सुनकर आनन्दकिशोर अवाक् रह गए।

ग्राम-विद्यालय से चौथी कक्षा पास करने के बाद

आगे की पढ़ाई के लिए आपको लाहौर भेजा गया। आप खालसा स्कूल में प्रविष्ट हुए। आपके पिता मातृ-भूमि के सच्चे पुजारी थे। उन्होंने देखा कि इस विद्या-लय की पढ़ाई तो पुत्र को अंगरेज़ का गुलाम बना देगी। उन्हें यह सहन न हुआ। उन्हें तो बालक को ऐसे विचारों में ढालना था कि वह बड़ा होकर मातृभूमि की परतन्त्रता की ज़ंजीरों को तोड़ सके। उन्होंने झट पुत्र को वहां से हटा लिया और डी० ए० वी० स्कूल में भरती कराया। इस होनहार सपूत ने नवीं कक्षा इसी विद्यालय में पास की।

सन् १६२१ में सारे देश में असहयोग-आन्दोलन शुरू हुआ। सारे भारतवर्ष में विदेशी वस्तुओं का बाय-काट किया गया। नगर-नगर में, घर-घर में विलायती कपड़ों की होली जलाई गई। देश के नेताओं ने विद्या-र्थियों के माता-पिता से अपील की कि आप अपने बच्चों को उन स्कूलों से हटा लें, जो किसी भी रूप में सरकार से सहायता लेते हैं।

देश के सच्चे सेवक सरदार किशनसिंहजी ने अपने सुपुत्र को डी० ए० वी० स्कूल से हटा लिया और नेशनल कालेज में पढ़ने भेजा। इस कालेज को चलानेवाले थे—पंजाब-केसरी लाला लाजपतरायजी

श्रौर प्रिंसिपल थे भाई परमानन्दजी। भाई परमानन्द सरीखे देश के सपूत को कौन नहीं जानता ! जवानी की वे सुनहरी घड़ियां हमारे जैसे साधारण मनुष्य खाने-पीने श्रौर खेलने-कूदने में ही बिता देते हैं। यह जीवन का वह हिस्सा है जब्र कि बड़े-ब्रड़े महात्मा भी भूल कर बैठते हैं। यौवन-भरे वे दिन श्रौर रातें इस महान् देशभक्त ने अ्रपने देश से दूर काले पानी की काल-कोठरी में बिताईं। धन्य है वह माता जिसने ऐसा वीर पुत्र उत्पन्न किया।

हां, तो पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय श्रौर भाई परमानन्द सरीखे वीरपुरुषों की छत्रछाया में सरदार भगतसिंह ने शिक्षा पाई। भाई परमानन्दजी ने होनहार शिष्य को झट पहचान लिया श्रौर उसे सीधा एफ० ए० में ले लिया श्रौर लगे उसे सांचे में ढालने। यहीं पर सरदार भगतसिंह को ऐसे-ऐसे सह-पाठी मिले जिन्होंने जीवन-भर एक-दूसरे का साथ निभाया। इन देशभक्तों की टोली में एक तो सुखदेव थे, जो इनके साथ ही फांसी चढ़े; दूसरे भगवतीचरणजी थे जिन्होंने भगतसिंह को जेल से छुड़ाने का यत्न किया। वे अ्रपने साथियों के साथ बम लेकर जेल की श्रोर बढ़ रहे थे कि एक बम मार्ग में ही फट गया

ग्रौर वह वीर स्वर्ग सिधार गया।

पढ़ाई के समय सरदार भगतसिंह ने राजनीति ग्रौर इतिहास के विषय लिए हुए थे। जब देखो वे ग्रपने साथियों के साथ इन्हीं विषयों पर बातचीत करते मिलते। इतनी लगन के नवयुवक थे वे। उन्हें नाटक ग्रादि खेलने का भी बड़ा चाव था। नाटकों के द्वारा भी देशभक्ति का प्रचार करते। संगीत तो इनके मन को बहुत भाता था। ग्राप ग्रच्छे-ग्रच्छे भाषण देना भी जानते थे। ग्राप इतने उत्साह से बोलते थे कि सुनने वालों के ग्रंग फड़क उठते। वीर भगतसिंह बातों ही बातों में ग्रंगरेज़ों के ग्रत्याचारों का ऐसा चित्र खींचते कि सभी लोगों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठती।

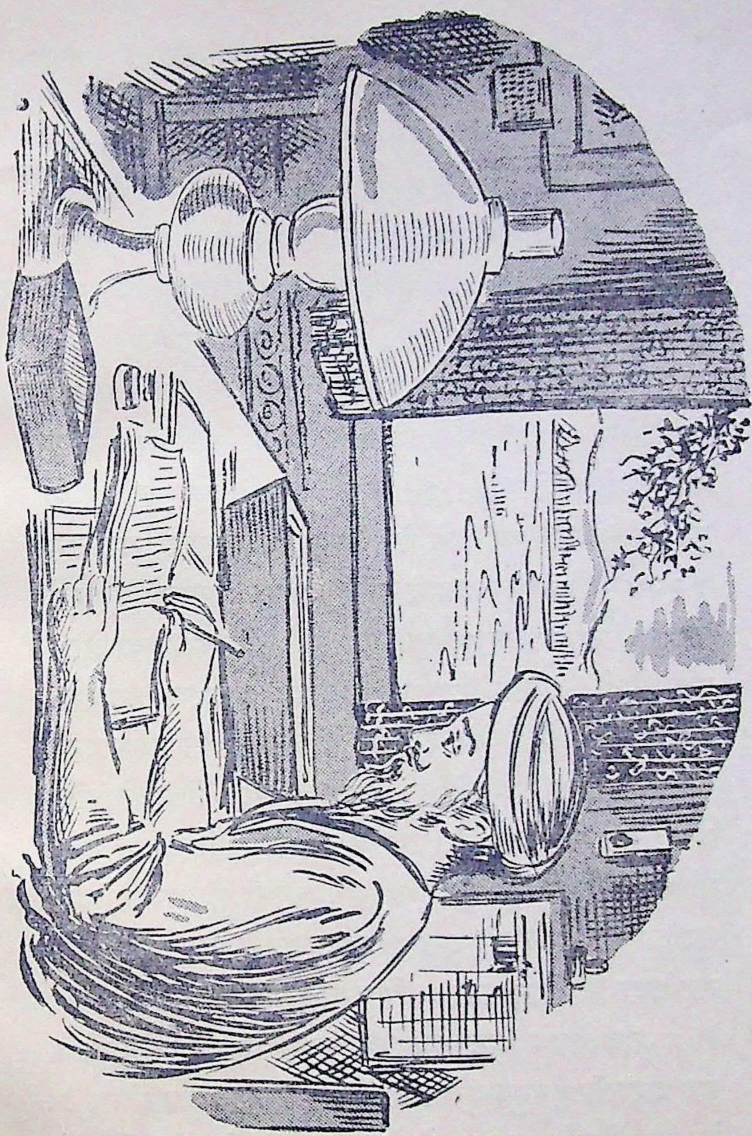
गुणों से भरपूर इस नवयुवक ने सन् १९३२ में एफ० ए० की परीक्षा पास कर ली।

गृह-त्याग

****

सरदार भगतसिंह के एक बड़े भाई भी थे, जिनका नाम जगतसिंह था। ग्यारह वर्ष की आयु में इनका देहान्त हो गया। इस मृत्यु से एक ओर तो भगतसिंहजी उदास रहने लगे और दूसरी ओर माता-पिता के हृदय पर गहरी चोट लगी। भगतसिंह की पढ़ाई अभी चल ही रही थी कि माता-पिता ने पुत्र का विवाह करने की सोची। पता लगते ही भगतसिंह ने साफ-साफ लिख दिया कि मुझे विवाह नहीं करना है। पिता ने पुत्र को लिखा, "चिरंजीव भगत! अब हमने एक लड़की देख ली है। परिवार हमें पसन्द है। तुम्हें हमारी बात मान लेनी चाहिए।" भगतसिंह ने फिर भी स्वीकार नहीं किया। अब तो माता-पिता अड़ गए।

और कोई बचाव का मार्ग न देख वीर नवयुवक



भगतसिंह कालेज से अपना सामान उठाकर कहीं चल दिए। माता-पिता चिन्ता न करें, इसलिए इन्होंने पिताजी को पत्र लिख दिया "मैं विवाह नहीं करना चाहता। इसी कारण से मैं कालेज छोड़कर जा रहा हूं। और कोई बात नहीं। आप चिन्ता न करें।"

लाहौर से चलकर आप दिल्ली जा पहुंचे। यहां के दैनिक पत्र 'अर्जुन' में कुछ समय तक संवाददाता का कार्य करते रहे। इन दिनों आप बलवन्तसिंह के नाम से कार्य कर रहे थे। यहां से चलकर आप सन् १९२४ में कानपुर पधारे और दैनिक 'प्रताप' में कार्य पर लग गए। उनका स्वभाव तो परिश्रमी था ही। इन दिनों दैनिक 'प्रताप' प्रसिद्ध देशभक्त गणेश-शंकर विद्यार्थीजी की देखरेख में चलता था। विद्यार्थी जी इस युवक के गुणों पर लट्टू हो गए। जिन्होंने वीर भगतसिंह को देखा है, उनका कहना है कि यह नव-युवक जितना ही हंसमुख था, उतना ही सुन्दर और सुडौल भी था। जो एक बार भी उससे बात कर लेता, वह सदा के लिए उसका मित्र बन जाता।

आप सबने बटुकेश्वरदत्त का नाम सुना होगा। इस बंगाली नवयुवक का बलिदान किसे भूला होगा! ये उन दिनों कानपुर में थे और इनकी भगतसिंह से

गाढ़ी मित्रता हो गई। उन दिनों गंगा और यमुना नदियों में भयंकर बाढ़ें आईं। गांव के गांव बह गए। कराहते हुए ग्रामीण भाई-बहनों को बचाने में इन दोनों मित्रों ने इतना काम किया कि दिन तो दिन, रात-रात-भर जागकर विपत्ति में पड़े भाई-बन्धुओं की सेवा में लगे रहे।

उन दिनों कानपुर में जहां देखो, लोग इन वीर नवयुवकों की सेवाओं की बातें करते थकते नहीं थे। उन्हीं दिनों देश के एक और सच्चे सपूत चन्द्रशेखर 'आज़ाद' की इनसे भेंट हुई। इन नवयुवकों का दल सदा यही सोचा करता कि किस प्रकार विदेशियों के पंजे से मातृभूमि को छुड़ाया जाए।

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने सरदार भगतसिंह को एक राष्ट्रीय विद्यालय का मुख्याध्यापक बना दिया। इस कार्य को भी गुणों के भंडार भगतसिंह ने ऐसे उत्तम ढंग से निभाया कि देखनेवाले चकित थे कि नवयुवक इस कठिन कार्य को किस योग्यता से निभा रहा है।

मां के चरणों में

****

भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंहजी ने सुना कि उनका पुत्र कानपुर में है। उन्होंने पुत्र को तार दिया कि तुम्हारी माता बीमार है और शीघ्र ही घर लौट आओ।

मातृभक्त पुत्र माता का कष्ट सुनते ही अपना कार्य छोड़-छाड़कर अपनी जन्मभूमि में आ पहुंचा। उसने घर पहुंचते ही माता की सेवा में दिन-रात एक कर दिया। वीर भगतसिंह की अनथक सेवाओं से माता शीघ्र ही स्वस्थ हो गईं।

इन दिनों पंजाब में 'गुरु का बाग़' वाले सत्याग्रह की धूम थी। एक ओर तो धड़ाधड़ पंजाबी नवयुवक वीर सिर पर कफन बांध सरकार की जेलें भर रहे थे, दूसरी ओर अंगरेज़ों का दमन-चक्र भी पूरे ज़ोरों पर

था। उन्होंने ग्राम-ग्राम में आज्ञा निकाल दी थी कि जो कोई भी उनकी सहायता करेगा, सरकार उसे कड़ा दंड देगी।

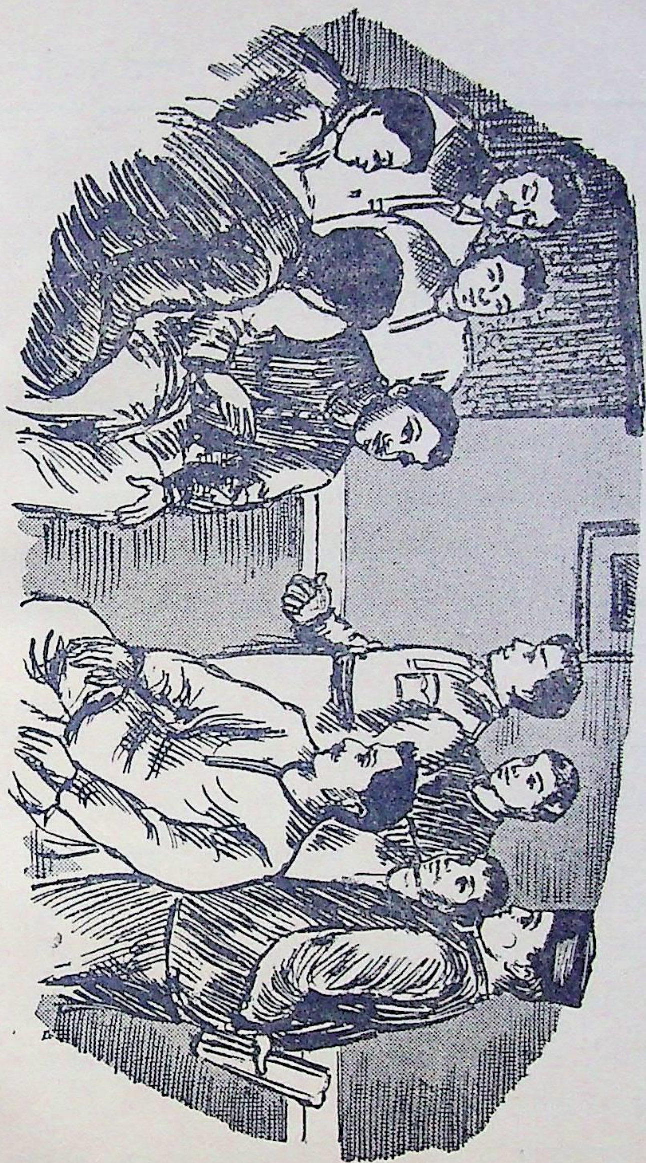
एक शहीदी जत्था ग्राम बंगा की ओर बढ़ा चला आ रहा था। यहां के लोग शासन के भय से उनका स्वागत करने में आनाकानी कर रहे थे। वीर भगतसिंह पिता की आज्ञा से सत्याग्रही वीरों के स्वागत और भोजन के प्रबंध में जुट गए। इस वीर के यत्न से उस जत्थे का शानदार स्वागत हुआ और ग्राम की ओर से एक सौ एक रुपया भी भेंट किया गया। उनको भोजन और वस्त्र आदि से खूब तृप्त करके विदा किया गया।

नवम्बर, सन् १९२४ में सरदार भगतसिंह ने 'नौजवान भारत सभा' की नींव रखी। पंजाब के नवयुवकों की टोलियों की टोलियां इस झंडे तले एकत्र होने लगीं। देखते ही देखते इस सभा की शाखाएं दूर-दूर तक फैल गईं। सरदार भगतसिंह का विश्वास था कि यदि विदेशी शासन को चूर-चूर करना है तो शक्ति का सहारा लेना होगा। इतने बड़े देश का राज्य कौन प्रसन्नता से छोड़ेगा। उन्हें तो देश से निकालना ही पड़ेगा। इसी लक्ष्य को सामने रखकर नवयुवकों का संगठन किया गया।

इस सभा का सदस्य बनने की फीस चार आने मासिक और एक रुपया वार्षिक रखी गई। देखते ही देखते एक सौ पचीस रुपये इकट्ठे हो गए।

इस सभा की पहली बैठक में वीर भगतसिंह ने घोषणा की, "साथियो ! आज वह समय आ गया है कि हम सब एक होकर विदेशी शासन की जड़ों को उखाड़ फेंकें। आज हमारे देश में जो भूख और बेरोज़गारी का नंगा नाच हो रहा है, उसको मिटाना होगा। राम और कृष्ण के नामलेवाओ ! गुरु गोविन्द के लाड़लो ! उठो ! जागो ! अपने पूर्वज राजपूत वीरों की तरह सिर पर केसरिया बांधकर मातृभूमि की दासता की बेड़ियों को काट फेंको। वीरो ! जिस तरह महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और हरिसिंह नलुआ सरीखे असंख्य वीरों ने अपना रक्त दे-देकर अपनी जन्मभूमि की वाटिका को सींचा था और हरा-भरा रखा था, आज फिर वह दिन आ गया है कि मातृभूमि देश के नवयुवकों का बलिदान चाहती है। है कोई माता का लाल ! जो आज दुःखों से तड़पती हुई जननी जन्मभूमि की पुकार पर अपने को न्योछावर कर दे !"

'हम तैयार हैं', 'हम मर मिटेंगे', 'मातृभूमि अमर रहे' के गगनभेदी नारों से आकाश गूंज उठा। नव-



युवकों की नसें फड़क उठीं और वे अपने आपे में न रहे।

वीर नेता भगतसिंह का हृदय उछल पड़ा। उसने खड़े होकर कहा, "भाइयो ! बातों से ही नहीं, अपने रक्त से प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करो।" सबसे पहले वीर भगतसिंह ने अपना हाथ चीरकर कलम को रक्त से भिगोकर हस्ताक्षर किए। फिर सुखदेव और भगवतीचरण ने भी वैसा ही किया। तीन और नवयुवकों ने अपने रक्त से हस्ताक्षर किए। यह कठिन परीक्षा सामने देख दुर्बलहृदय नवयुवक एक-एक करके खिसक गए।

अब 'नौजवान भारत सभा' का प्रचार शुरू हुआ। बीस-बीस, पचीस-पचीस नवयुवक टोलियां बनाकर ग्राम-ग्राम में और नगर-नगर में जाकर लोगों को देश की विपत्तियों की कहानी सुनाते और विदेशी शासन के अत्याचारों का ऐसा चित्र खींचते कि लोगों की आंखों से आंसू ढुलक पड़ते।

इसके बाद वीर भगतसिंह अंगरेज़ सरकार की आंखों में खटकने लगा। विदेशी सरकार इसके हर कार्य पर दृष्टि रखने लगी।

लायलपुर में एक दिन देशभक्तों ने बड़ी भारी

सभा की। यहां पर लोगों को बताया गया कि अंगरेज़ सरकार किस तरह हमारे देश का रक्त चूस रही है। सरदार भगतसिंह ने भी भाषण दिया। इस युवक ने उन वीरों को प्रशंसा की जिन्होंने समय-समय पर अंगरेज़ अत्याचारियों को गोली से मारा। मिस्टर डे नामक अंगरेज़ को गोली मार देनेवाले बंगाली नवयुवक गोपीनाथ साहा की वीरता की प्रशंसा की।

अब तो अंगरेज़ी सरकार वीर भगतसिंह से कुपित हो गई और उसे दंड देने का अवसर ढूंढ़ने लगी। इस बीच भगतसिंह यहां से चलकर कानपुर चले गए और बच गए, परन्तु सरकार ने उनके पीछे-पीछे अपने गुप्तचर लगा दिए।

यहां का कार्य समेट-समाटकर वीर भगतसिंह बेलगांव कांग्रेस देखने जा पहुंचे। यहां से लौटकर आप फिर पंजाब प्रान्त में आ गए। अमृतसर में 'अकाली' पत्र के सम्पादन का कार्य करते रहे। इन दिनों पुलिस फिर आपके पीछे लग गई और शीघ्र ही आपको बंदी बना लिया गया। बाद में छः सहस्र रुपये की ज़मानत पर आपको रिहा कर दिया गया।

लाहौर में रामलीला

****

सन् १६२६ की बात है। लाहौर में बड़े समारोह से रामलीला मनाई जा रही थी। सहस्त्रों लोग भगवान् राम की झांकी देखने के लिए बाज़ार-बाज़ार में, गली-गली में इकट्ठे हो रहे थे। स्त्रियां और बच्चे मकानों की छतों पर एकत्र हो रहे थे। इसी बीच न जाने किस आदमी ने भीड़ में घुसकर बम फेंक दिया, जिससे कई आदमी घायल हो गए।

सरकार ने अपराधी को खोजने का यत्न ही नहीं किया। इस घटना पर सरकार से मांग की गई कि अपराधी को ढूंढ़िए और दण्ड दीजिए। सरकार से कुछ न बना तो, कई निरपराध देशभक्त नवयुवकों को जेल में ठूंस दिया।

पुलिस बड़े यत्न से भगतसिंह को भी खोज रही

थी। वह उसे भी इसी केस में घसीटना चाहती थी। एक दिन वीर भगतसिंह दरवाज़े से बाहर खड़े अपने मित्रों से बातचीत कर रहे थे। अचानक पुलिस की एक टुकड़ी ने आकर इन्हें घेर लिया। उन्होंने हंसते-हंसते पुलिस-इंस्पेक्टर से कहा, "क्या सरकार के पास और कोई काम नहीं रहा कि मेरे जैसे साधारण मनुष्य को पकड़ने के लिए इतनी दौड़-धूप कर रहे हो ?"

भला पुलिस-इंस्पेक्टर क्या उत्तर देता! उसने उन्हें आगे बढ़ बन्दी बना लिया और बांधकर ले चला। उन्हें न्यायालय में ले जाया गया। पुलिस ने बड़े-बड़े दोष मढ़े और कहा कि यह वही युवक है जिसने अंगरेज़ी शासन के विरुद्ध क्या-क्या नहीं किया। इसका सारे का सारा परिवार अंगरेज़ी शासन का शत्रु है। रामलीला के अवसर पर बम फेंककर लोगों में भय पैदा करनेवाला भी यही है। इस तरह राज्य के कार्य में बाधा डालने वाले और लोगों को डरानेवाले इस युवक को कठोर से कठोर दण्ड मिलना चाहिए।

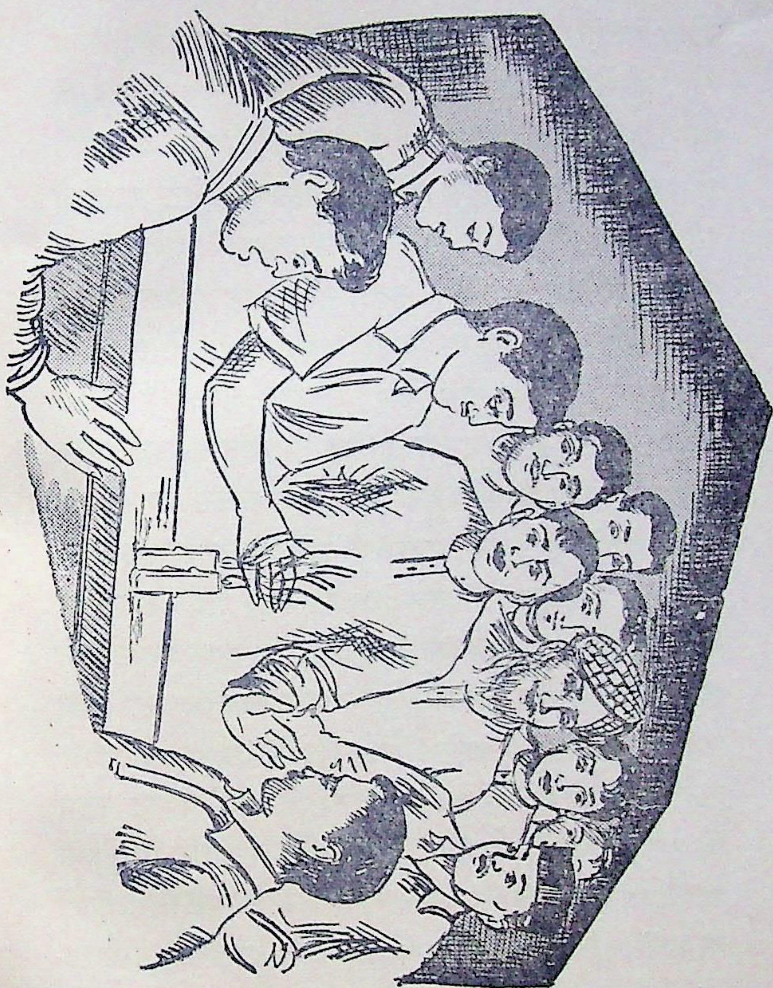
पुलिस अधिकारियों के बहुत हाथ-पांव मारने पर भी वे भगतसिंह पर लगाए गए एक भी दोष का प्रमाण न दे सके। फिर भी शासन इस नवयुवक को

छोड़ना नहीं चाहता था। अन्त में नगर के प्रतिष्ठित लोग बीच में पड़ गए। इसपर सरकार ने एक वर्ष के लिए साठ सहस्र की ज़मानत पर इन्हें छोड़ दिया।

सन् १९२७ में आपने लाहौर में एक डेरी फार्म खोला। नगर के लोगों को शुद्ध दूध बेचने का प्रबंध किया गया। एक वर्ष तो वीर भगतसिंह ने जैसे-तैसे इस कार्य को निभाया। किन्तु समय-समय पर आप क्रान्तिकारियों की टोलियों में भी जाते और अंगरेज़ों से बदला लेने के ढंग सोचा करते। इस तरह कई बार नगर से बाहर जाते रहने से डेरी फार्म को बहुत धक्का लगा। अन्त में इन्होंने डेरी फार्म को बन्द कर दिया।

इन्हीं दिनों देश में काकोरी केस की बड़ी धूम मची हुई थी। नगर-नगर में सरकार के अत्याचार के विरुद्ध सभाएं और हड़तालें हो रही थीं। लाहौर में ब्रेडला हाल में नवयुकों ने एक 'विद्यार्थी संघ' खोला। इस संघ का कार्य भी नवयुवकों में देशभक्ति को जगाना था।

इन्हीं दिनों शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान का दिन आ गया। सरदार भगतसिंह ने बड़े उत्साह से मैजिक लालटेन से इस वीर की कहानी लोगों को सुनाई। इसके बाद ब्रेडला हाल में इसी तरह दूसरे शहीदों के दिन भी मनाए जाने लगे। लोगों में अंगरेज़ो



राज्य के विरुद्ध क्रोध की ज्वाला भड़क उठी ।

'नौजवान भारत सभा' का बाहरी रूप बड़ा शांत था। एक बार भगतसिंह ने देखा कि कई सरकारी गुप्तचर ऊपर-ऊपर से तो देशभक्ति की बातें करते हैं और हमारा भेद लेने के लिए 'नौजवान भारत सभा' के सदस्य बने हुए हैं। अतः एक बार बहुत कठिन परीक्षा लेने का प्रबन्ध किया गया। छः मोमबत्तियां एक-दूसरे के साथ-साथ खड़ी करके जला दी गईं। सबसे पहले सरदार भगतसिंह ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। बीस मिनट तक अपना हाथ उन जलती हुई मोमबत्तियों पर रखे रहा, जिससे उसका रक्त और मांस जल-जलकर गिरने लगा; फिर भी उसने हाथ नहीं हटाया। यह देख उसके साथियों ने बलपूर्वक उसका हाथ खींच लिया। इस बीच नकली सदस्यों का हृदय कांप गया और वे सभी धीरे-धीरे खिसक गए।

सन् १९२८ में आप 'शहनशाहे चक' नामक ग्राम में रहने लगे। भगतसिंह प्रायः लाहौर आदि नगरों में जाते रहते और देशभक्त वीरों से मिलते रहते। इन दिनों भगतसिंह किन-किन देशभक्तों में उठते-बैठते रहे और क्या-क्या कारनामे करते रहे, इनका कहीं पता नहीं मिलता।

यहां से एक दिन अचानक आप कहीं चल दिए।

पंजाब-केसरी का बदला

****

आप एक बार फिर उत्तरप्रदेश में जा निकले। जुलाई, सन् १९२८ में झांसी नगर में क्रान्तिकारी नवयुवकों की बैठक हुई। निश्चय हुआ कि सितम्बर के महीने में दिल्ली के पुराने किले के नीचे देश-भर के क्रान्तिकारी इकट्ठे हों और पूरे बल के साथ अंगरेज़ गोरों को देश से खदेड़ने का यत्न किया जाए।

सूचना पाते ही सभी प्रान्तों के क्रान्तिकारी वीर दिल्ली जा पहुंचे और पुराने किले के नीचे इकट्ठे हुए। सबने एकमत होकर चन्द्रशेखर आज़ाद को अपना नेता चुना। सरदार भगतसिंह के प्रस्ताव से दल का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा गया। दल का यह नाम सरदार भगतसिंहजी इसलिए रखना

चाहते थे कि देश के शासन की बागडोर भारतवासी स्वयं संभालें, जिससे मातृभूमि पर छा रहे विपत्तियों के बादल दूर हों और देशवासी सुखी हों।

दल का कार्यालय झांसी से बदलकर आगरा लाने का निश्चय हुआ।

बैठक में यह भी निश्चय हुआ कि दल के दो प्रकार के सदस्य हों। एक तो वे हों जो दिन-रात इसी कार्य में लगे रहें। दूसरे वे हों जो धन आदि से दल के कार्यों में सहायता दें।

घर के काम-काज को बिसराकर, परिवार के सुखों को लात मारकर देश के सच्चे सपूत युद्ध में कूद पड़े। सिर पर कफन बांधकर ये देश के लाल मैदान में उतर आए। इन्हें बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कहीं धन नहीं है, कहीं सर्दियों के दिनों में गरम कपड़े नहीं हैं, कहीं खाने को नहीं है। सरदार भगतसिंह के हंसमुख मुखड़े को देख साथियों को बड़ी शान्ति मिलती।

प्रथम महायुद्ध में जर्मनी के विरुद्ध भारतवासियों ने अंगरेज़ों की भरपूर सहायता की। इस युद्ध में विजय पाने के बाद हमारे नेताओं को अंगरेज़ों से बड़ी-बड़ी आशाएं थीं।

रोते भारत के आंसू पोंछने के लिए विलायत से साइमन कमीशन चला। निश्चय तो यह हुआ था कि उसमें आधे भारतीय सदस्य लिए जाएंगे, किन्तु समय पर उन्होंने एक भी भारतीय सदस्य न लिया। इससे देश-भर में क्रोध की लहर उमड़ पड़ी।

लाहौर के रेलवे स्टेशन पर ३० अक्तूबर को साइमन कमीशन का सरकार की ओर से स्वागत होना था। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय के पीछे-पीछे लाहौर के सहस्रों नवयुवक 'साइमन कमीशन, लौट जाओ' के नारों से आकाश को गुंजाते हुए स्टेशन की ओर चल दिए। वीर भगतसिंह आज के दिन यहीं थे। संगीनें हाथों में लिए पुलिस ने जनता की अपार भीड़ को रोकना चाहा। जब जनता किसी तरह भी न रुकी तो निहत्थे लोगों पर लाठियां बरसाई गईं। एक अंगरेज़ पुलिस-अधिकारी तो आपे से बाहर हो गया। उसने आगे बढ़ जनता के हृदय-सम्राट् पंजाब-केसरी लाला लाजपतरायजी के सिर पर ऐसे ज़ोर से लाठी मारी कि उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और वे गिरते-गिरते बचे।

यह देख सरदार भगतसिंह की भौंहें क्रोध से तन गईं, परन्तु उचित समय न देख वे मन मारकर रह

गए। पंजाब-केसरी इस चोट को न सह सके और ठीक अठारह दिन बाद संसार से कूच कर गए।

नवयुवक दल अपने नेता की मृत्यु पर भड़क उठा। उन्होंने किसी तरह पता लगा लिया कि लाठी मारनेवाला अंगरेज़ अधिकारी कौन है। १७ दिसम्बर को दिन ढलने के समय साढ़े चार बजे के लगभग वही अंगरेज़ सांडर्स मोटर-साइकिल पर चढ़कर घर से दफ्तर को जानेवाले ही थे कि अचानक उनपर दो-तीन गोलियां बरसीं और वे वहीं ढेर हो गए। चपरासी चन्दनसिंह ने नवयुवकों का पीछा किया। उसको भी गोली से ठंडा कर दिया गया।

ये तीन नवयुवक भगतसिंह, आज़ाद और राजगुरु भागकर डी० ए० वी० कालेज में जा छिपे। इनकी हार्दिक इच्छा थी कि आज पुलिस से दो-दो हाथ किए जाएं, परन्तु बहुत देर तक कोई पुलिस न पहुंची।

इन तीन वीरों के लाहौर से निकल भागने की कहानी भी सुनने योग्य है। सरदार भगतसिंह सिर पर फैल्ट हैट पहने एक साहब बहादुर जैसे कपड़े पहन रेलवे स्टेशन पर जा धमके। उनके नौकर का वेश भी देखने योग्य था। वह बने वीर राजगुरु जो बाद में इनके साथ ही साथ फांसी पर चढ़े थे। वे अर्दली की वेशभूषा



में ऐसे सज रहे थे कि किसीको भी शक न हुआ। पुलिसवालों ने आगे बढ़कर झुककर सलाम किया।

श्री आज़ाद बने साहब की मेम। उनकी सजधज तो सबसे निराली थी। पहले दरजे का टिकट लेकर यह मंडली गाड़ी में जा बैठी। सबके देखते-देखते ये क्रान्तिकारी वीर शासन की आंखों में धूल झोंक साफ-साफ निकल गए।

बाद में पुलिस ने डी० ए० वी० कालेज और सारे नगर में सिपाहियों का जाल बिछा दिया। इन मनचले देशभक्तों ने तो अपने हृदय-सम्राट् पंजाब-केसरी का बदला ले लिया था। ऐसा करके उन्होंने सरकार को बता दिया कि यदि हमारे किसी नेता की ओर टेढ़ी आंख की गई तो वह आंख निकाल ली जाएगी।

असेम्बली में बम

****

अब सरदार भगतसिंह ने बम बनाना सीखा। इसके लिए आपको बिहार और बंगाल तक जाना पड़ा। बाद में तो बंगाल से कई नवयुवक आए। उन्होंने लाहौर और सहारनपुर में आकर अपने साथियों को बम बनाना सिखाया। झांसी के आसपास बमों को फेंककर उनकी परीक्षा ली गई। ये परीक्षाएं बिलकुल सफल हुईं। अब तो कानपुर में भी बम बनाए गए। दिन में तो वहां जूते बनते थे और रात के अंधेरे में वहीं क्रांतिकारी युवकों की गुप्तसभाएं होती थीं और बम भी बनते थे।

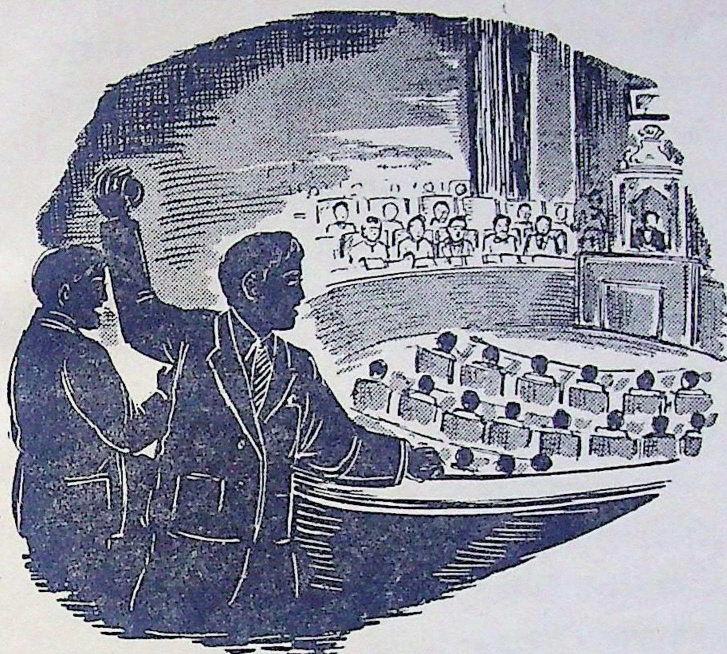
बम्बई नगर में मज़दूर हड़ताल करना चाहते थे। वे अच्छी तरह तन ढकने के लिए और पेट भरने के लिए मज़दूरी बढ़वाना चाहते थे। सरकार उन्हें ऐसा

न करने देने के लिए 'पब्लिक सेफ्टी बिल' पास करवाना चाहती थी।

न रोने की इजाज़त है, न फरियाद की है।
घुट-घुट के मर जाऊँ, यही मरज़ी मेरे सैयाद की है।।

जनता पर खुले हाथों अत्याचार ढाने के लिए यह नया ढंग निकाला गया। बिल असेम्बली में ले जाया गया। उन दिनों असेम्बली के प्रधान श्री वी० जे० पटेल थे। भारतवर्ष के गृहमन्त्री लौहपुरुष स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल के ये बड़े भाई थे। इन वीरों की याद आते ही भला किसका हृदय फड़क नहीं उठता। श्री वी० जे० पटेल ने बहुत यत्न किया कि यह बिल पास न हो। जब वोट लिए गए, तो दोनों ओर का पलड़ा बराबर रहा। प्रधान ने अपने विशेष वोट से बिल को ठुकरा दिया। सरकार के पिट्ठुओं ने इसी बिल को दूसरी बार पेश किया। इस बार असेम्बली में सरकार के जी-हज़ूरियों की संख्या बढ़ गई थी और बिल के पास हो जाने की पूरी-पूरी आशा थी।

नवयुवक दल इस बिल के विरोध पर तुल गया। उन्होंने तय किया कि असेम्बली भवन में ठीक उस समय जब कि बिल पास किया जाए, बम फेंककर सरकार को बताया जाए कि देशवासी इसे नहीं चाहते। कौन



इस कार्य का बीड़ा उठाएगा—इसपर पर्चियां डाली गईं। भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त के नाम निकले। ये दोनों नवयुवक प्रसन्नता से उछल पड़े।

सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त कोट और पैंट पहन अंगरेज़ी वेशभूषा में सज-धजकर ८ अप्रैल, १९२९ को असेम्बली-भवन में जा पहुंचे। इनकी तड़क-भड़क देख किसीको शक तक नहीं हुआ और वे बिना किसी बाधा के भीतर पहुंच गए। ठीक उस

समय जब कि बिल पास होने वाला था, सरदार भगतसिंह अपने साथी के साथ गैलरी में पहुंच चुके थे। इनके पास पिस्तौल और बम दोनों चीज़ें थीं। इन्होंने जाते ही खाली कुर्सियों और बेंचों पर बम फेंके। बड़े जोर से धमाका हुआ। चारों ओर धुआं ही धुआं फैल गया। लोग घबराकर चिल्लाने लगे। कइयों ने तो भागकर स्नानगृह में शरण ली। इस बीच सरदार भगतसिंह ने दो खाली गोलियां भी चलाईं। कुछ लोगों को साधारण चोटें आईं।

इन नवयुवकों की इच्छा किसीको चोट पहुंचाने की तो थी नहीं। शांति होने पर लोगों ने देखा कि दो नवयुवक गैलरी में खड़े मुस्करा रहे हैं। अब उन्होंने लाल-लाल परचे हाल में फेंके, जिनपर पब्लिक सेफ्टी बिल के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा हुआ था। साथ-साथ इन्होंने 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद' के नारे लगाने शुरू किए।

इस समय ये नवयुवक चाहते तो भाग सकते थे, परन्तु ये अपने स्थान पर ही निर्भीकता से खड़े रहे। पुलिस ने असेम्बली-भवन को चारों ओर से घेरा डाल लिया और इन्हें पकड़ने के लिए आगे बढ़ी। सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त ने अपनी-अपनी पिस्तौलें फेंक दीं और पुलिस ने उन्हें हथकड़ियों से जकड़ लिया।

भूख-हड़ताल

****

सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त पर धारा ३०७ और ४३३ के अनुसार मुकदमा चलाया गया। कचहरी को आते-जाते समय मार्ग में सहस्रों की संख्या में लोग जुट जाते और इन वीरों के दर्शन करते थकते ही नहीं थे। ये दोनों वीर भी उत्साह में भरकर खूब नारे लगाते और आकाश को गुंजा देते।

इन्होंने छोटी अदालत में बयान देने से इनकार कर दिया, इसलिए इन्हें सेशन कोर्ट में ले जाया गया। यहां वीर भगतसिंह ने बयान देते हुए कहा कि हमने जो कुछ किया है, जान-बूझकर किया है। इसके लिए दंड भी भुगतने को तैयार हैं। हम तो केवल अंगरेज़ी शासन को बताना चाहते हैं कि भारतवासी अब किसी भी तरह का अत्याचार सहन नहीं करेंगे।

अदालत ने इन दोनों नवयुवकों को १२ जून, सन् १९२९ को कालापानी का दंड दिया, जिसे दोनों ने हंसते-हंसते स्वीकार कर लिया।

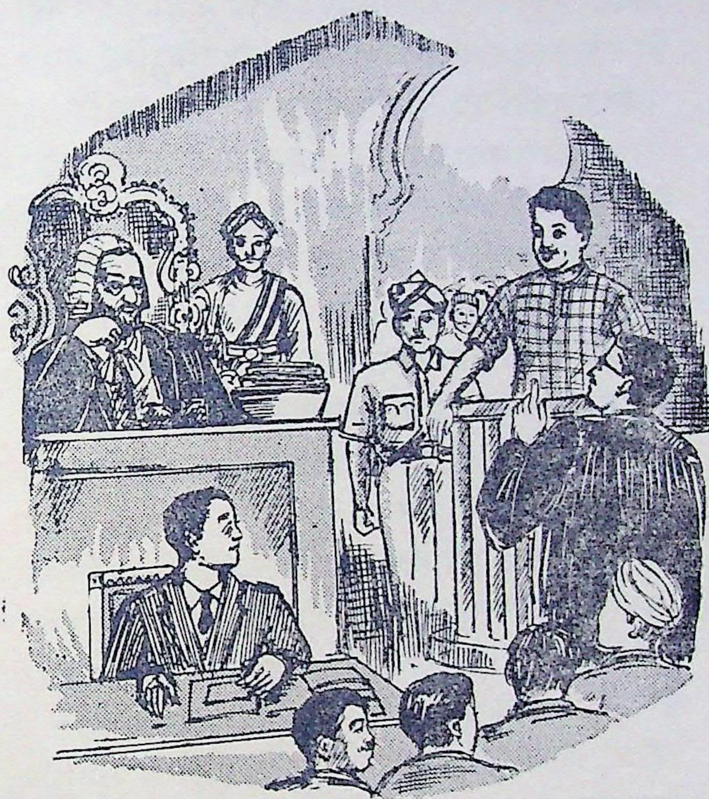
सरदार भगतसिंह को मियांवाली जेल में भेज दिया गया और बटुकेश्वरदत्त को लाहौर सेण्ट्रल जेल में रखा गया।

बाद में सरदार भगतसिंह पर दूसरा मुकदमा चलाया गया कि इसी ने सांडर्स की हत्या की है। फिर तीसरा दोष लगाया गया कि रामलीला के अवसर पर बम फेंककर लोगों में भय पैदा करनेवाला भी यही है।

शीघ्र ही भगतसिंह को लाहौर लाया गया और मियांमीर स्टेशन पर उतारा गया। देखते ही देखते सहस्रों लोग इकट्ठे हो गए और नारों से आकाश को गुंजा दिया।

इस बीच १५ अप्रैल के दिन पुलिस ने लाहौर के किला गुज्जरसिंह नामक मुहल्ले में एक घर पर छापा मारा। यहां पर सुखदेव, जयगोपाल और किशोरीलाल को पकड़ा गया। यहां पर बहुत-सा बम बनाने का सामान पुलिस के हाथ लगा।

१० जुलाई को मुकदमे की सुनवाई शुरू हुई।



मुकदमा डेढ़ वर्ष तक चलता रहा। पुलिस ने कुल चौंतीस युवकों पर दोष लगाए; इनमें से नौ पकड़े नहीं जा सके। सात युवक क्षमा मांगने पर छोड़ दिए गए। अठारह युवकों को सरकार ने अलग-अलग दंड दिया।

सरदार भगतसिंह को सवा वर्ष से अधिक जेल के सींखचों में बन्द रहना पड़ा। वह स्वतन्त्रता का पुजारी इस जीवन से ऊब गया। उसने जेलर को पत्र लिखा, "हमने मातृभूमि से प्रेम करने का अपराध किया है। हमें या तो छोड़ दिया जाए या सेना बुलाकर गोली से उड़ा दिया जाए। हमें किसी भी कानून के अनुसार जेल में सड़ाने का अधिकार नहीं है। ऐसा करके आप हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं।"

इस मुकदमे के बीच एक बार सरकारी वकील के बयान पर सरदार भगतसिंह को हंसी आ गई। इस-पर सरकारी वकील ने कहा कि आप अदालत का अपमान कर रहे हैं। वीर भगतसिंह हंसकर बोला, "मैं तो जीवन-भर हंसता रहा हूं और हंसता रहूंगा। आज आप मुझपर दोष लगाते हैं। परन्तु जब मैं फांसी के तख्ते पर हंसूंगा, तब आप कौन-सी अदालत में शिकायत करेंगे?"

इन दिनों जेल में न तो बन्दियों को अच्छा खाना

दिया जाता था और न रहने का ही ठीक प्रबन्ध था। इसपर भगतसिंह और सभी साथियों ने भूख-हड़ताल कर दी। वीर यतीन्द्रनाथदास तिरसठवें दिन स्वर्ग सिधार गए। सहस्रों लोगों ने इन्हें श्रद्धांजलि भेंट की। फिर उस शव को कलकत्ता ले जाया गया। मार्ग में हर स्टेशन पर अपार भीड़ ने उस पुण्यात्मा के दर्शन किए और जय-जयकार से आकाश गुंजाते रहे।

वीर भगतसिंह ने एक सौ पन्द्रह दिन तक भूख-हड़ताल की। संसार चकित हो गया कि यह युवक किस चीज़ का बना हुआ है कि मृत्यु भी इससे कांपती है!

बाद में सरकार झुक गई और जेलों में सुधार हुए।

फांसी के तख्ते पर

****

सात अक्तूबर, १९३० को सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी का दंड मिला।

उधर महात्मा गांधी और लार्ड इरविन का समझौता हो चुका था। देश-भर में ४ मार्च से असहयोग-आन्दोलन बन्द हो चुका था। सभी बन्दी छोड़े जा चुके थे। परन्तु महात्माजी ने इन युवकों को छुड़ाने के लिए कुछ न किया।

हाईकोर्ट में अपील की गई, वह अस्वीकार हो गई। प्रीवी कौंसिल में भी अपील हुई, परन्तु कुछ न हुआ। सरदार भगतसिंह तो ऐसी अपीलों के विरुद्ध थे। वह वीर तो मृत्यु को हंसता हुआ निमन्त्रित कर रहा था।

फांसी का दिन २४ मार्च, सन् १९३१ नियत हुआ। जेल के नियम के अनुसार फांसी प्रातःकाल होती



है। परन्तु सरकार इतनी डर गई थी कि इन्हें २३ मार्च के सायंकाल को ही फांसी पर चढ़ा दिया। फांसी पर झूलने से पहले इन वीरों ने स्वतन्त्रता-गान गाया और हंसते-हंसते फांसी का फंदा गले में डाल लिया। उसी समय इन तीनों शवों को लारी में डालकर फिरोजपुर के पास सतलुज के तट पर ले जाया गया। वहीं इन्हें अग्नि की भेंट कर दिया गया।

इधर लाहौर नगर में किसी न किसी तरह यह घटना जनता को पता लग गई। उसी समय कुछ लोग किराये पर लारी करके सतलुज के तट पर जा पहुंचे, परन्तु वहां उन्हें राख के सिवा और कुछ न मिला। वीर भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु की फांसी के समाचार से सारे देश में शोक छा गया। अंग्रेज़ों के विरुद्ध जनता उबल पड़ी। शहरों में हड़तालें हुईं, स्थान-स्थान पर सभाएं हुईं और बड़े-बड़े जुलूस निकाले गए।

मेरे देश के बच्चो! वीर भगतसिंह सरीखे मां के सच्चे सपूतों को याद करना हम सबका कर्त्तव्य है। इस वीर ने हंसते-हंसते अपना सुखों से भरा जीवन मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया। यदि आज भगतसिंह होते तो देश को स्वतन्त्र देख फूले न समाते।

○○○

11011

सरल प्रेरणाप्रद जीवनियां

रवीन्द्रनाथ ठाकुर	स्वामी रामतीर्थ
लाला लाजपतराय	गुरु गोविन्दसिंह
सरदार पटेल	सदाचारी बच्चे
डा० राजेन्द्रप्रसाद	महापुरुषों का बचपन
विनोबा भावे	वीर पुत्रियां
जवाहरलाल नेहरू	लालबहादुर शास्त्री
महात्मा गांधी	आदर्श बालक
हरिसिंह नलवा	आदर्श देवियां
चन्द्रशेखर आज़ाद	सच्ची देवियां
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	सुन्दर कथाएं
गुरु नानकदेव	भारत के महान ऋषि
सुभाषचन्द्र बोस	अच्छे बच्चे
शिवाजी	गौतम बुद्ध
महाराणा प्रताप	सम्राट अशोक
चाणक्य	वीर हनुमान
लोकमान्य तिलक	हमारे स्वामी
श्रीकृष्ण	श्री अरविन्द
स्वामी विवेकानंद	वीर सावरकर

[प्रत्येक का मूल्य एक रुपया]

•

कुछ अन्य पुस्तकें

डा० विश्वेश्वरैया	१·५०	इन्दिरा गांधी	२·००
हमारे राष्ट्रनिर्माता	२·००	डा० ज़ाकिर हुसेन	२·००
स्वामी श्रद्धानन्द	१·५०	ये महान कैसे बने	१·५०

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली